PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 2

साठोत्तरी उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्र परिकल्पना

श्री जाधवर धनराज संदिपान
शोधार्थी
हिंदी भाषा एवं साहित्य अनुसन्धान केंद्र
महात्मा बसवेश्वर महा वद्यालय लातूर ४१३५३२ महाराष्ट्र

मानव जीवन का संपूर्ण चित्र ही उपन्यास है। उसकी यथार्थता एवं प्रकारांतर से सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि उपन्यासकार कितने सशक्त रुप से समाज के चरित्रों को सही रुप में अपनी लेखनी द्वारा उभार पाया है या नहीं। हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का विश्लेषण ही उपन्यास का मूलाधार है। हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का विश्लेषण ही उपन्यास का मूलाधार है। चरित्र चित्रण ही उपन्यास का सार है। इसके बिना पात्र अधूरा रहेगा उपन्यास लिखा नहीं जा सकेगा। अत: उपन्यास के पात्र सहज सप्राण और विश्वसनीय होने चाहिए जिससे उपन्यास पढ़ते समय पाठक को सदैव यह अनुभूति हो कि वह एक जीवंत सागर की लहरों में झूम रहा है, उन पात्रों की भावनाओं में वह बह रहा है। चरित्र–चित्रण न केवल उपन्यासों का अनिवार्य तत्त्व है अपितु वह आज के उपन्यास का मेरुदंड भी है। वाल्टर एलन का कहना है– ''महान चरित्र के अभाव में कोई भी उपन्यास महान नहीं बन सकता''।

प्रेमचंद ने भी कहा है कि– ''भावी उपन्यास जीवन चरित्र होगा, चाहे किसी बड़े आदमी या छोटे आदमी का।'' उपन्यास में चरित्र–चित्रण के महत्त्व को उद्‌घाटित करते हुए प्रेमचंद ने कहा है कि–''उपन्यासों में चरित्रों का चित्रण जितना स्पष्ट, गहरा और विकासपूर्ण होगा, पाठकों पर उसका उतना ही गहरा असर पड़ेगा।''

उपन्यास में चरित्र के विविध रुपों को प्रकट करना, प्रस्तुत करना ही चरित्र–चित्रण का महत्त्वपूर्ण आधार है। आज के उपन्यासों के चारित्रिक उद्‌भावनाओं का स्वरुप बदल गया है। समाज में चारित्रिक मान्यतायें बदल गयी हैं। और उसी के साथ उपन्यास के लेखन में भी परिवर्तन आ गया है। कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। अत: समाज में परिवर्तन आने के साथ–साथ उपन्यासों में भी परिवर्तन अपना स्वाभाविक ही है।

शिक्षा का प्रचार–प्रसार नये विचारों का आविर्भाव नयी व्यवस्था एवं विविध पक्षीय सामाजिक संपर्क आदि के कारण मानव–चरित्र जटिल होता जा रहा है। पहले का मनुष्य अपने घर गॉव या नगर आदि के कारण सीमित परिवेश की देन था। यात्रा आदि करने के कारण किसी आस–पास की कोरी–जगह चला जाता था। अत: बाहरी दुनिया से उसका संपर्क अतिअल्प रहता था। पर आज के संदर्भ में मानव चंद्रमा तक पहुँच चुका है। आज वह विज्ञान के माध्यम से सभी वैज्ञानिक संस्थानों में नये–नये प्रयोगों में जुटा हुआ है। उसका जीवन अति जटिल हो गया है। उसका हर संबंध असहज एवं जटिल होता जा रहा है जिससे उसकी भावनाएँ और उलझ गयी प्रतीत होती हैं।

साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों में मनुष्य का एक वैचारिक, प्रफुल्ल अवसादपूर्ण पक्ष उभरता है और उसमें जीवन के प्रति मान्यताएँ बदल गयी हैं तथा बदल रही है। प्रेमचंद ने संभवत: मानव चरित्र की पहचान की। प्रेमचंद के समय से लेकर आज तक लेखक उन अनबूझ चरित्रों को सुलझाने में लगा हुआ है। लेकिन ये आसानी से लेखकों के हाथ नहीं आ रहे हैं। औपन्यासिक चरित्रों का आंतरिक संघर्ष भी तीव्रतम होता जा रहा है क्योंकि व्यक्तिगत जीवन में भी मनुष्य अनेक संघर्षों से गुजर रहा है। आज उपन्यासों के पाठकों का बौद्धिक स्तर उंचा हो गया है।

''अज्ञेय भी चरित्र की सफलता को उपन्यास की सफलता की कसौटी मानते हैं।'' जे. डब्ल्यू. बीच का कहना है कि– ''चरित्रों की महत्ता उनके अलौकिक और अतिभौतिक चमत्कारों एवं शक्तियों से संपन्न होने में नहीं है, असंभव एवं दुर्लभ ही जिसके उपजीव्य हों ऐसे अस्वाभाविक रोमांस में नहीं है। वह है संभव और सुलभ में सहज और सुंदर में।''

जिस प्रकार ईश्वर मनुष्य को रचकर उसमें अच्छाई बुराई, खुशी, गम, उल्लास, दु:ख सभी भावनाओं का समावेश करता है ठीक उसी तरह उपन्यासकार अपनी कल्पना द्वारा पात्रों की रचना करता है कि वह अपने चरित्र को इतना सशक्त बना देता है कि वह उसमें सभी भावनाओं को इतनी बारीकियों से भर देता है कि पाठक को वह अपने सदृश्य लगता है। यहीं पर उपन्यासकार सभी की प्रशंसा पा जाता है। उसके काल्पनिक पात्र सत्य घटनाओं पर आधारित भूमिका में पाठकों में सामंजस्य बैठा देता हैं। उपन्यासकार की लेखनी की यही विशेषता होती है। उसके पात्र पाठकों को हॅसाते हैं, रुलाते हैं, क्रोधित करते हैं, नफरत कराते हैं, बदले की अग्नि में जला देते हैं। इन अनुभूतियों का ज्ञान ही पाठक द्वारा उन पात्रों से अपनी तुलना कर उसमें तारतम्य बैठाता है।

उपन्यास के प्रारंभिक काल में चरित्र सीधे सादे सु और सु और कु में विभाजित मिलते थे। किंतु आज के चरित्रों का आंतरिक संघर्ष तीव्रतम होता जा रहा है क्योंकि आज का व्यक्ति भी अपने जीवन में अनेक संघर्षों से गुजर रहा है।

उपन्यास के पाठकों में भी समय के साथ परिवर्तन आया है अब वे काल्पनिक नायकों को नहीं देना चाहते वे अपने समान कर्मठ नायक में ही रस से पाते हैं। आज का पाठक सच्चाई के धरातल पर ही लिखे जाने वाले उपन्यास को पढ़ना पसंद करता है। आज का पाठक अधिक प्रबुद्ध हो गया है।

आज का उपन्यासकार अपने पात्रों में व्यक्तिगत विशेषता डालकर उसे महान बनाता है। वह नायक और नायिका को महान स्थान पर स्थापित करता है। इन्हीं पात्रों में वह सामाजिक विशेषता और मानवीय विशेषताओं को भी भर देता है। इन्हीं के कारण उपन्यास एक अमिट संदेश देता है। जिन उपन्यासों में जीवंत पात्र होते हैं वे ही उपन्यास पाठकों को मान्य होते हैं।

साठोत्तरी उपन्यासों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि उपन्यास के सभी पात्र अपने उद्देश्य में सफल हो रहे हैं तथा बदलते जीवन मूल्यों की जटिलताओं को, विसंगतियों को, विभिन्न प्रकार की वृत्तियों को वे उद्घाटित कर रहे हैं। समाज में फैली बुराइयों को भी पात्रों द्वारा उठाना तथा उसको सुधारने का काम भी उपन्यासों द्वारा होता है। उपन्यास को आगे बढ़ाने के लिए नये पात्रों की परिकल्पना भी की गई है जैसे मैत्रेयी पुष्पा रचित बेतवा बहती रही में सर्वदमन। 'आपका बंटी' में बंटी भी बहुत कुछ अपने पिता अजय पर गया है। वह कुछ–कुछ 'इगोइस्ट' और 'पजेसिव' प्रकृति का है। अजय का स्वभाव भी वैसा ही था। वह खड़े–खडे थालियॉ फेंकता था और ये कटोरी फेंकता है। मनुष्य मृत्तिका पिंड के समान है। उसे सहज रुप प्रदान कर संस्कारित करनेवाले अनेक तत्त्व हैं, जो इन उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत हुए हैं। अनुवंशिकता, शैशव कालीन प्रभाव, शिक्षा, वातावरण, मैत्री आदि का प्रभाव, विशिष्ट परिस्थितियॉ, मनोवैज्ञानिक स्थितियॉ, आदि सभी को लेकर उपन्यास लिखे जाते हैं। उनमें इन सभी परिस्थितियों का समावेश होना आवश्यक होता है।

''कथानक यदि उपन्यास का आकार है, तो पा;ा उसके अंग प्रत्यंग तथा नायक उसका प्राण होता है।'' नायक पाठकों के जीवन मूल्यों का सूचक होता है। वह संपूर्ण उपन्यास रचना का एक बिंदु भी होता है। नायक के आगे पीछे ही संपूर्ण कहानी का सूत्र बना जाता है। नायक प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप में उपन्यास में आद्यंत समाया रहता है उसी के कारण हम जानते हैं कि वर्तमान समाज में कौनसी मान्यताएॅ हैं, समाज किस दशा में करवट बदल रहा है। समकालीन समाज में प्रचलित जीवन मूल्य क्या है। मूल्य, जीवन में अवनति या उन्नति का कारण कैसे बनते हैं। यदि लेखक को कुछ संदेश देना रहता है या वो कुछ मान्यताओं को बताना चाहता है, तो लेखक के विचार नायक में ही जीवंत हो उठते हैं और वह उपन्यास में नायक द्वारा ही अपना संदेश समाज को दे पाता है।

साठोत्तरी उपन्यासों में चित्रित पात्र जीवन को जीने की अकुलाहट, छटपटाहट तड़प कशमकश से बाहर निकलने की चेष्टा इत्यादी समकालीन उपन्यास साहित्य में आये परिवर्तनों को परिलक्षित करवा रहे हैं। ''आधुनिकता की प्रक्रिया के कारण ही आज के उपन्यासों में अभिजात्य नायक का स्थान मध्य व निम्न मध्यवर्गीय नायक ने लिया है और तत् पश्चात् वह भी एक ऐसे बिंदु पर पहुॅचा जहॉ उसकी अपनी

पहचान के अर्थ भी बेमानी और धुँधले पड़ने लगे। एक ऐसा बिंदु आया जहाँ उसके परंपरागत अर्थों पर शंका उठने लगी। समय की माँग कहें या युग की आवश्यकता, आधुनिकता की यह प्रक्रिया जब कुछ अनजाने ध्रुवों पर जाकर नायक की परंपरागत अवधारणा को अस्वीकारने लगी। ठीक वही बिंदु नायक–विहीन उपन्यासों की परिकल्पना का जन्मदाता हुआ।

आज का समाज मूल्यहीनता के संकट में फँसा हुआ है। आज कोई विशेष व्यक्ति समाज का उद्धार करने या नये रास्ते पर समाज को ले जाने के लिए आगे नहीं आ रहा है। सर्वत्र स्वार्थ ने घेरा हुआ है। अपने को ही पूर्ण करने में प्रत्येक व्यक्ति अनवरत भटक रहा है। इस युग में परिलक्षित मानवीय विघटन की प्रक्रिया ने नायक की स्थिति को ही विघटित कर दिया है। इन सभी कारणों से समाज में ऐसे व्यक्ति का निर्माण नहीं हो पा रहा है जो एक संदेश देता हो जो एक मिसाल कायम करता हो जो सभी के उत्थान की बात सोचते हुए उसे क्रियान्वित करता हो।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साठोत्तर हिंदी उपन्यासों की चरित्र योजना युगीन उपन्यासों के वस्तु विधान के अनुरुप पर्याप्त विविधता पूर्ण सामाजिक जीवन के विभिन्न वर्गों तथा मानव स्वभाव के नाना रुपों को प्रकट करती है। युग के बदलने के साथ–साथ ही परिवेश का परिवर्तन होता है जिससे पात्र परिकल्पना में भी परिवर्तन आते हैं। आज का युग संघर्ष का युग है। आज के नायक की कल्पना मध्ययुगीन या आदि कालीन नायक से नहीं कर सकते हैं। आज भी नायक महान होता है लेकिन उसका चरित्र वैविध्यपूर्ण होता है। उसकी भावनाएँ परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती हैं। आज के नायक या नायिका पर कोई सीमा बंधन नहीं है। आज इसकी परिभाषा ही बदल गई है। आज चरित्रवान या चरित्र हनन वाले व्यक्ति पर समान रुप से ही रचना की जाती है। आज का नायक महान चमत्कारिक नहीं होता है वरन सहज मानवीय कमजोरियाँ उसमें होती हैं। मानव मूल्यों के विघटन के कारण आज उसके समझ में ही नहीं आ रहा है कि वह किस बात को अपनाये और किससे दूर रहे। आज अनेक से सिक्त मानव है।

संदर्भ :

१. देयर ईज ग्रेट नावेल विदाउट ग्रेट केरेक्टर वाल्टन एलन–द इंग्लिष नावल, पृ.15.
२. डॉ. बेचैन – कुछ विचार, पृ.39.
३. प्रेमचंद–कुछ विचार, पृ.68
४. आज कल, मार्च, 1953, पृ.12
५. वीरेंद्र कुमार जैन–उपन्यास सिद्धांत और संरचना, पृ.16 से उद्धरित.
६. डॉ.कुसुम वार्ष्णेय–हिंदी उपन्यास में नायक (भूमिका)
७. परिशोध, संयुक्त अंक 16, पृ.21–22